प्रकाशक --

गोकुलदास धूत,

नवयुग साहित्य सदन

मजूरी बाजार, इन्दौर सिटी.

—•—

संस्करण

अगस्त १९३९ . ५,०००

जनवरी १९४० . ३०००

मई १९४५ : ५,०००

नवम्बर १९४६ १००००

मूल्य चार आना

—•—

मुद्रक—

सी० एम० शाह

माडर्न प्रिन्टरी लिमिटेड, इन्दौर।

भारत-भाग्य-विधाता

जनगण-मन- अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य विधाता !
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, वंगा,
विन्ध्य.हिमाचल. यमुना, गङ्गा,
उच्छल जलधि-तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

अहरह तव आह्वान प्रचारित,
सुनि तव उदार वाणी,
हिन्दु, बौद्ध, सिख, जैन, पारसिक,
मुसलमान, ख्रिस्तानी,

पूरब पश्चिम आसे.
तव सिंहासन पासे.
प्रेमहार हय गाँथा !
जनगण ऐक्य विधायक जय हे,
भारत भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !
पतन अभ्युदय बन्धुर पन्था युग-युग धावित यात्री,
तुमि चिरसारथि तव रथचक्रे मुखरित पथ दिन-रात्री,
दारुण विप्लव माझे.
तव शंखध्वनि बाजे.
संकट-दुःखत्राता !
जनगण-पथ परिचायक जय हे.
भारत-भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !
घोर तिमिरघन निबिड़ निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे.
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेषे

दुःस्वप्ने आतंके,
रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता !
जनगण दुःखत्रायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

रात्रिप्रभातिल उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरि भाले
गाहे विहगम पुण्यसमीरण नवजीवन रस ढाले !
तव करुणारुण रागे,
निद्रित भारत जागे !
तव चरणे नतमाथा !
जय जय जय हे जय राजेश्वर,
भारत भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं, हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ[1] हमारा !
'इकबाल' कोई मरहम[2] अपना नहीं जहाँ में,
मालूम क्या किसी को दर्देनिहाँ[3] हमारा !

—मुहम्मद इक़बाल

मेरा वतन

चिश्ती ने जिस जमीं में पैगामेहक[4] सुनाया,
नानक ने जिस चमन में वहदत[5] का गीत गाया,
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया,
जिसने हिजाजियों[6] से दश्ते[7] अरब छुड़ाया,
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है !
सारे जहाँ को जिसने इल्मो हुनर दिया था,
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था,

---

१ काल चक्र २ भेद जाननेवाला ३ भीतर की व्यथा
४ ईश्वर का सन्देश ५ अद्वैतवाद ६ अरब निवासी
७ जंगल

मिट्टी को जिसकी हक़ने ज़र[1] का असर दिया था.
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था.

मेरा वतन वही है. मेरा वतन वही है !

टूटे थे जो सितारे. फ़ारस के आसमां से.
फिर ताब दे के जिसने चमकाये कहकशां[2] से.
वहदत की लय[3] सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से.
मीरे अरब[4] को आई ठंडी हवा जहां से.

मेरा वतन वही है. मेरा वतन वही है !

बन्दे कलीम[5] जिसके. परबत जहां के सीना[6].
नूहे नबी का ठहरा आकर जहां सफ़ीना[7],
रफ़अत[8] है जिस ज़मीं की बामे फ़लक का ज़ीना.
जन्नत की ज़िन्दगी है जिसकी फ़िज़ा में जीना.

मेरा वतन वही है. मेरा वतन वही है !

---

१ सोना २ आकाश गंगा ३ ध्वनी ४ हज़रत
५ हज़रत मूसा ६ तूर पहाड़ जिसपर मूसा को
ईश्वरीय ज्योति के दर्शन होना माना जाता है
७ नाव

गौतम का जो वतन है, जापान का हरम है,
ईसा के आशिकों को मिस्ले येरूशलम है,
मदफ़ून[2] जिस ज़मीं में इस्लाम का हशम[3] है,
हर फूल जिस चमन का फ़िरदौस[4] है, इरम है,
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

—मुहम्मद इक़बाल

हमारा देश

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुंच अनजान क्षितिज को,
मिलता कूल किनारा।
सरस तामरस गर्भ-विभा पर,
नाच रही तरु-शिखा मनोहर,
छिटका जीवन-हरियाली पर,

---

[1] ऊँचाई [2] गड़ा हुआ [3] गौरव [4] स्वर्ग

मंगल कुंकुम सारा !
अरुण यह मधुमय देश हमारा !

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे,
भरती ढुलकाती सुख मेरे !
मदिर ऊँघते रहते जब जग कर रजनी भर,
तारा !
अरुण यह मधुमय देश हमारा !

लघु सुरधनु से पंख पसारे,
सुरभि पवन अनुकूल सहारे !
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये,
समझ नीड़ निज प्यारा !
अरुण यह मधुमय देश हमारा !

बरसाती आँखों के बादल,
बनते जहाँ भरे करुणा जल !
लहरें टकरातीं अनन्त की,
पाकर जहाँ किनारा !
अरुण यह मधुमय देश हमारा !

—जयशंकर प्रसाद

अर्चना के रत्नकण में
एक कण मेरा मिलालो।
जब हृदय का तार बोले
शृङ्खला के बन्द खोले
हों जहाँ बलि शीश अगणित
एक सिर मेरा मिलालो।

—सोहनलाल द्विवेदी

———

क़ौमी गीत

दावा है हर आन हमारा
सारा हिन्दुस्तान हमारा
जंगल और गुल्जार हमारे,
दरिया और कुहसार हमारे।
कूचे और बाजार हमारे,
फूल हमारे, खार हमारे।
हर घर हर मैदान हमारा,
सारा हिंदुस्तान हमारा।

गो नहीं हममें फ़ौजी ताक़त,
फिर भी बहुत है दिल में हिम्मत।
और हमारे साथ है कुदरत,
अब कोई ताक़त कोई दुश्मन।
रोक तो दे तूफ़ान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।

हममें भारत की रौनक़ है,
आज़ादी दिन रात सबक़ है।
अपनी धनक है अपनी शफ़क़[१] है
हर ज़र्रे पर अपना हक़ है।
खेत अपने दहक़ान[२] हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा।

मन्दिर, मस्जिद और मयखाना[३]
साक़ी[४] 'भारत'[५] का पैमाना।
जोगन बस्ती का दीवाना,
हर महफ़िल का हर अफ़साना[६]।

---

१ [illegible] की लाली २ [illegible] ३ मधुशाला ४ [illegible]
५ [illegible] का [illegible] ६ [illegible]

हर दर हर एवान[1] हमारा ,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

गो है पामाल[2] अपनी हस्ती,
हर सू है पस्ती[3] ही पस्ती ।
तन आसानी[4] ऐशपरस्ती,
दिन भर फाका शब[5] भर मस्ती ।
है यह मगर ईमान[6] हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो,
सिर्फ यहाँ एक कौम बगी हो ।
बार[7] न पाये ख्वाह कोई हो,
चाहे वह खुद अपनी खुदी हो ।
देख जरा अरमान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

—'सागर' निज़ामी

---

१ राजमहल २ मिटी हुई ३ नीचाई, बर्बादी
४ काहिली ५ रात ६ विश्वास ७ दखल

मातृ-वन्दना

अम्बर ! जननी तुम्हें प्रणाम !
तुम्हें पवन प्राणों की आस !

सागर है तेरा सिंहासन
ऊँचा मुकुट हिमालय
अलकें पर्वतमालायें हैं,
गंगा माला सलिल

धानी हरा साज है तेरी,
हैं अभिसिंचन-नीर नदियाँ,
जिन्हें चाँदनी मधुर हँसी है
रोम-रोम तरु लतियाँ
तेरे हैं परिधान. गगन है ऊपर तना वितान

अम्बर ! जननी ! तुम्हें प्रणाम !
तुम्हें पवन प्राणों की आस !

[illegible] है. [illegible]
[illegible] है [illegible]

हम इतने करोड़ प्राणों की
तू माँ शक्ति-निधाना,
जीवनधात्री विजयप्रदात्री
सुखदा, वरदा, भरणी !
कर्ता-भर्ता-संहर्ता की
एकाकृति तू धरणी !!
तेरी अतुल शक्ति के साधन
अनगिन तन-मन-प्राण
जन्मभू ! जननी ! तुझे प्रणाम !
तुझे वदन प्राणों की प्राण !

तेरे प्राणों से अनुप्राणित,
तेरे ही जीवन से जीवित,
तेरे पावक से ज्योतिर्मय
भू-नभ से लालित-पालित
इतने कोटि प्राण-कलशों में
भरकर स्नेह-प्रसेक
अपने हृदयासन पर करते
हम तेरा अभिषेक

चरण-रेणु तेरी हम सबका
क्षेम, कुशल कल्याण
जन्मभू ! जननी ! तुझे प्रणाम !
तुझे चन्दन प्राणों की प्राण !

प्राणों के लोहू का टीका
देकर तेरे भाल
बलि हो जाँय इन्हीं चरणों में
तेरे जागरित लाल
एक गोद में पले हुओं का
अजर अमर है नाता
हम सब कोटि-कोटि मिल-जुलकर
कहते—— भारत माता !
तेरे चरणों में तेरे हित
हम देवें बलिदान
जन्मभू ! जननी ! तुझे प्रणाम
तुझे चन्दन प्राणों की प्राण !
—सुधीन्द्र

भारत माता

माता-सी प्रिय भारत माता !
तुल सकता इसकी तुलना में,
कैसे और किसी का नाता ?
जन्म दिया निज तनु-तत्वों से,
पालन किया सकल सत्वों से,
लिया हमें आजन्म अंक में,
विशद वेद वाणी की दाता !
माता-सी प्रिय भारत माता !

अग्रज अनुज अतुल उपजाये,
सती सुता, सज्जन सुत पाये,
दिग्विजयी विज्ञान-विशारद,
विश्रुत ब्रह्मज्ञान के ज्ञाता !
माता सी प्रिय भारत माता !

क्या समता इसकी ममता की !
अमित कथा इसकी क्षमता की !
भव्य भावना-भरित विभूषित

निर्भय विभूति अभय भय त्राता !
माता-सी प्रिय भारत माता !

वंचित हैं इसके प्रसाद से,
तज सब सेवा प्रमाद से.
कर असहाय हाय ! जननी को.
जन जन कौन नहीं दुख पाता !
माता-सी प्रिय भारत माता !

—'एक राष्ट्रीय आत्मा

वह देश कौन-सा है ?

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है ।
सुख स्वर्ग सा जहाँ है. वह देश कौन-सा है ?
जिसका चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है ।
जिसका मुकुट हिमालय. वह देश कौन-सा है ?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं ।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है ?

जिसके बडे रसीले फल, कन्द, नाज, मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन सा है?
जिसमें सुगन्धवाले सुन्दर प्रसून प्यारे।
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती।
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसकी अनन्त धन से धरती भरी पडी है।
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन सा है?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया—
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन सा है?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी।
गौतम, कपिल, पतंजलि वह देश कौन सा है?
छोडा स्वराज तृणवत् आदेश से पिता के।
वह राम थे जहाँ पर, वह देश कौन-सा है?
निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे।
लक्ष्मण भरत सरीखे, वह देश कौन सा है?
देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थी।

माता पिता जगत का, यह देश कौन सा है ?
आदर्श का जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी ।
हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौन-सा है ?
विद्वान, वीर योगी, गुरु, राजनीतिकों के।
श्रीकृष्ण थे अधिपति, वह देश कौन-सा है ?
जिसकी पन्ना जहाँ देवी गुरुता थे।
गुरु, द्रोण, भीम, अर्जुन वह देश कौन-सा है ?
जिसने दधीचि, दानी हरिश्चन्द्र, कर्ण-से थे ।
सब लोक का हितैषी, वह देश कौन-सा है ?
वाल्मीकि, व्यास ऐसे जिसके महान कवि थे ।
श्री कालिदास-वाला वह, देश कौनसा है ?
निष्पक्ष न्यायकर्ता जन जो, जहाँ निरे हैं ।
वे सब दया निधि, वह देश कौन-सा है ?
हैं कोटि-कोटि भाई भारत सपूत जिसके ।
भारत विनाश हर्ता वह देश कौन-सा है ?

-[illegible] सिंहा

दान दे !

जननि ! दान दे !
आत्मभान दे !
तेरी नित रहे तान, वही गान दे !
जननि ! दान दे !

तन मे बल, मन निश्चल
सुगुण सकल, यत्न सफल
अटल सुदृढ निश्चय दे, पुण्य प्राण दे !

जननि ! दान दे !
स्वाभिमान हम न तजें
तदपि निरभिमान रहें
त्याग, तप, सहिष्णुता, बलिदान, ज्ञान दे !
जननि ! दान दे !

भाव दीजिए गभीर
बनें सकल धीर-वीर
तेरी अनुरक्ति-भक्ति, विमल ध्यान !
जननि ! दान दे !

तेरे पद शीश धरें
अर्पण सर्वस्व करें
तेरे हित जियें-मरें, विजय दान दे!
जननि! दान दे!

—जयनारायण व्यास

जय, जय, जय हे भारत जननी!

जय, जय, जय हे भारत-जननी!
प्यारी मात हमारी!
हिन्दू, पारसी, सिक्ख, मुसलमान
सब सन्तान तुम्हारी!
कोटि पुत्रों से [illegible] हो!
कुल-दीपकों से तुम सजती हो!
तो अपना पालन करें माँ, [illegible]!
भारती की पुण्य [illegible]
है [illegible]

सत्य अहिंसा के शस्त्रों से काटें व्यथा तुम्हारी
आजादी की किरणों से खिल
हम सब कलियाँ डालें हिल-हिल
गले हार फूलों का, जिनकी खुशबू न्यारी-न्यार
जय, जय जय हे भारत-जननी !
प्यारी मात हमारी !

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

प्यारा भारत देश हमारा!

भारत प्यारा देश हमारा !
माँ वसुधा के हृदय-गगन का है उज्वल ध्रुवतारा
ज्ञान-उदधि, श्रुति-स्मृति के पडित,
गौरव गुरु हिमगिरि-शिर-मण्डित,
तट प्रदेश सुशोभित करती पुण्य जान्हवी-धारा
प्यारा भारत देश हमारा !

हिन्द-अरब पग धोते प्रति क्षण;
चवर डुलाता मलय समीरण;

श्यामल सुंदर विमल सकल निधि निज का भंडार!
प्यारा भारत देश हमारा!

जग-विजयी, जग-विदित, दिवा-सम:
अर्जुन, राम, प्रताप, शिवा-सम:
धीरों ने इंगित पर जिनके तन मन धन सब वारा!
प्यारा भारत देश हमारा।

चन्द्रप्रकाश भानेदिला 'हरना'



जागरण गीत

तू जाग, आज मेरे स्वदेश !

साहस, गौरव, संयम समेत,
इतिहास पुरातन के प्रमाण !
भारत-विभूति ! निर्मलविवेक !
निर्वाण ज्ञान, गीता विधान !
कर्तव्य-बोध से ओत-प्रोत,
हे पांचजन्य के आदि स्रोत !
तू जाग, आज मेरे स्वदेश !

दासत्व-शृङ्खला हीन भीम,
ले यौवन में पौरुष अथाह !
जीवनमय, जाग्रतिमय, प्रबुद्ध,
उठ सागर-सम वलयितप्रवाह !
दुर्जय, अमोघ, नव वीर्यश्लोक,

हे मेरे जीवन-धन आलोक !

तू जाग, जाग मेरे स्वदेश !

सब भूले यदि हो वीतराग,

हैं स्मरण तुमको ज्ञान-पुञ्ज !

तुमने निर्माण संस्कृति पुनीत,

हैं वसुधा के कल्याण-कुञ्ज !

हैं जनित तपोवन, प्रणव-घोष,

हैं 'ईशावास्यमिदं' प्रबोध,

तू जाग, जाग मेरे स्वदेश !

—सुमित्रा मिश्र

जागो, हुआ विहान !

राज्यध्वंस हो गया, लुट गयीं,
वैभव—माणिक—मणियाँ !
देखो, घर की श्री-सम्पति का
कौन बना अधिराज ?
जागो, जागो, ऐ नरेश,
लुट गया तुम्हारा 'नाज' !
मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

काशी लुटी, अयोध्या लुट गई,
मथुरा लुटी विशाल;
उठा ले गये परदेशी
भर-भर सुवर्ण के थाल !
इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन पर,
देखो बैठा कौन ?
जागो, जागो, ऐ स्वदेश,
है व्यथा भगाती मौन
मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

यह दरिद्र का देश, बन गये
हो भिक्षुक—कंगाल
छिपा गये हो फटे जीर्ण—
वस्त्रों से तन—कंकाल!
'दो दो दाने' को देते हो
कम्पित हाथ पसार
दग्ध कपोलों पर बहती
रहती आँसू की धार!
मेरे हिन्दुस्तान!
जागो, हुआ विहान!

[illegible] सेना का शासन!
नव कांग्रेस स्वाधीन!!
इसके आगे और कहानी
क्या होगी तौहीन!
जागो, जागो, [illegible]

मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

भीम और अर्जुन के पुत्रों !
वने हुए हो दास !
ऐसे पराधीन जीवन से
मधुर मृत्यु का पाश !
कुरुक्षेत्र में गूँज रहा है
भैरव शंख—निनाद !
जागो, जागो, आज
पाण्डवों के रण के उन्माद !
मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

जीना है, तो जियो आज
होकर स्वतन्त्र हे वीर !
नहीं म. । जाओ नीचे
पृथ्वी की छाती चीर !
जागो जागो, आज
महाभारत के भीषण गान !

जागो, जागो, ये अगणित

मरनेवाले प्रण प्राण !

मेरे हिन्दुस्तान !

जागो, हुआ विहान !

—सोहनलाल द्विवेदी

उगता राष्ट्र

अक्षय सञ्जीवन प्रद मद से,

कर अन्तरतर भरपूर, शूर !

तुम एक चरण में भय, चिन्ता,

सन्देह, शोक कर चूर चूर;

प्राणों की विप्लव-लहर,

विश्व में पहुँचा देते दूर-दूर !

तुम नवयुग के ऋषि सूत्रधार !

मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

उन्मत्त प्रलय की तन्मयता,

तुम ताण्डव के उल्लास-हास,

युग परिवर्तन की आकांक्षा,

उच्छृङ्खल सुख की तीव्र प्यास

तुम वन्य-कुसुम, तुम नग्न प्रकृति,

की पावनता की मुग्ध वास

तुम आडम्बर पर पद-प्रहार !

मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

तुम यौवन-फल के पुष्प और

शैशव कलिका के हो विकास

तुम दो विश्वों के सन्धिस्थल
पर आशा के उज्ज्वल प्रकाश,
तुम भावी जगत के नवचेतन,
वसुधा के उर के अमर हुलास,
तुम उजड़े उपवन की बहार !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

तुम वह प्रारब्ध सन्देश,
बिखर जाते जिसमें दुख दैन्य-क्लेश,
वह गर्मी, जिससे अंकुर फूल,
बन सुधा, गरल बने अशेष:
तुम रवि की प्रथम किरण के,
निशि के उर में वह निर्भय प्रवेश,
जिससे कँप जाता अन्धकार,
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

जो अन्धकार को दूर करे,
तुम उस निर्झर के जल प्रवाह,
जो रुग्ण-हृदय को प्यार करे,
उस मार्ग न रुकती राह.

जो तड़पे भोग-विलासों में,
उस त्यागी उर की उष्ण आह,
तुम संकट-साहस पर निसार।
मेरे किशोर! मेरे कुमार!

तुम नूतन की जय, जिसको सुन
कँप उठता जीर्ण जगत थरथर,
वह वायुवेग द्रुत होती गति,
जिससे मानवता की मथर!
वह जाग्रति-किरण अलस पलकों पर
तप्त शलाका-सी लगकर!
जो खुलवाती कर्तव्य द्वार!
मेरे किशोर! मेरे कुमार!

माँ के अंचल की ममता या
यौवन के सुख का लोभ नहीं,
जर्जरित जरा का पछतावा,
बीते जीवन का क्षोभ नहीं,
तुम वर्तमान के कठिन कर्म,
छू सकता तुमको मोह नहीं,

कर सकता कौन तुम्हें प्यार ?
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

तुम नहीं ठगाये जा सकते,
शस्त्रों से, अत्याचारों से,
तुम नहीं भुलाये जा सकते,
वीणा की मृदु झनकारों से;
तुम नहीं भुलाये जा सकते,
स्पर्शों से, प्यार दुलारों से;
तुम सुनते पीड़ित की पुकार !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

[illegible] शोणित से,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तुम रहे [illegible]
[illegible]
[illegible] !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

मेरे प्रह्लाद ! दमन-ज्वाला,
में मन्दस्मित बिखराते हो !
मेरे ध्रुव ! बाधा चीर हुए
पथ पर बढते ही जाते हो,
मेरे शुक ! प्रबल प्रलोभन में,
तुम अविचल धैर्य दिखाते हो !
तुम तप्त स्वर्ण, तुम निर्विकार !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

जिसके सम्मुख आ छिन्न-भिन्न
होंगे ये युग-युग के बंधन,
बह जाँय अमित साम्राज्य प्रबल,
ढह जाय समुन्नत स्वर्ण-भवन,
गौरव-सिंहासन, गर्व-मुकुट,
भूलुठित हों बनकर रजकण,
वह संघशक्ति तुम दुर्निवार !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

—जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

भारत

उठ, उठ ओ मेरे स्मरणीय!
अभिनन्दनीय भारत महान!

जागो, अशोक! वह स्वर्ण-मुकुट
पश्चिम दिशान्त में गया ध्वस्त!
जागो, विक्रम! वह सिंहासन,
वह कब का ठहरा हुआ अस्त!

जागो, मोहन! ओ पाञ्चजन्य,
अब धर्म हो गया पाप-ग्रस्त!
जागो, पुरुषोत्तम! है भारत
भारत में शोषित, भीत, त्रस्त!

जागो, गान्धी! अच्छा, पर फिर
तू क्या जाने है [illegible]!

पाटलीपुत्र में जगे आज
युग-युग से सोया चन्द्रगुप्त,
जिसके आगे हो अलक्षेन्द्र
की विश्वविजय की चाह लुप्त!

चल पड़े महोबे से ऐसी
दिशि दिशि में वह हलचल अपार।
रज के कण-कण से जाग उठें
अगणित आल्हा-ऊदल कुमार।

सिक्खों में आज दहाड़ उठे
गोविन्दसिंह का शौर्य्य जाग!
रे, आज पचनद में फिर से
पुरु के पौरुष की उठे आग!

उठ, उठ, मेरे भारत महान।
मेरे ज्योतिर्मय! जाग जाग।

फिर जाग उठे बुन्देलों में
वह वीर-बाँकुरा छत्रसाल
इतिहास-पटल पर स्वर्ण-वर्ण
ध्वनित है जिसका यश विशाल

भर उठे मराठों में गर्जन
नर शिवा केसरी, पुण्य-राज
जाना जिसने जग में अपने
प्राणों से भी बढ़कर 'स्वराज'

है जिना आलोकित चमक उठे
सब कलिकाओं की सुर्खी जाग
पत्थर पत्थर से फूट पड़े
क्षत्रिय का आत्मोत्सर्ग-त्याग !
उठ, उठ, मेरे भारत महान !
मेरे गायक जाग, जाग !

फूंके उठ नव [illegible] [illegible]
हल्दी—घाटी का फिर दीप
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

सोयीं आशाएँ उठें जाग
रोमों में तन के जगे आग
युग-युग से कीलित जिह्वा में
जग उठे अचानक प्रलय-राग
उठ, उठ, मेरे भारत महान
मेरे प्रलयङ्कर ! जाग, जाग !

तुम लो करवट, हिल उठे धरा,
डोले अम्बर का रत्न-जाल
अँगड़ाई लेने लगे विश्व
लहरें सागर के अन्तराल

हो आज हिमालय अनलालय
हिमबिन्दु बनें ये अग्नि-खण्ड
धर लो मानवता का विशाल
इसके कन्धों पर केतु-दण्ड

क्षणभंगुर नश्वर जीवन में
अजरामर-अक्षर उठे जाग

ओ गत की रति रति में जागे
नव हिन्द-सूर्य की महाजाग !
उठ, उठ, मेरे भारत महान !
मेरे [illegible] ! जाग, जाग !

—सुधीन्द्र

हे नूतन वर्ष-विहान जाग !

हे गौरव के अभिमान, जाग !
हे मर मिटने की शान, जाग !
हे भारत के अभियान, जाग !
हे [illegible]-विहान जाग !

हे जीवन के उत्थान, जाग !
[illegible] के [illegible], जाग !
हे भारत के अभिमान, जाग !
हे युवक देश की शान, जाग !

हे मज़दूरों की शान, जाग !
हे [illegible] के [illegible], जाग !

हे वैश्यों के धन-दान, जाग !
हे शूद्र-हृदय के ध्यान, जाग !

भारत-माता के नौनिहाल !
आशामय प्राणद उषाकाल,
है काट रहा तममय विशाल
अँगड़ाई का आलस्य-जाल।

हिन्दू ! तू तप की विमल वास,
ईसाई ईसा का प्रकाश,
पैगम्बर के भ्रातृत्व-बीज—
का मुस्लिम में जो है विकास,

सिक्खों ! उन त्यागभरी स्मृतियों
का तुममें है जो अट्टहास,
आओ सब लेकर चलें, करें
उस राष्ट्र-यज्ञ का सुप्रकाश,

जिसमें जीवन का अन्धकार,
मिट जावे यह दासत्व भार।
स्वागत करते हैं हे आगत !
तू नूतन वर्ष-विहान जाग।

हे युवक! यही तो है निदान,
जलने दो मन ज्वाला महान्!
जलने दो ये जर्जर मढ़ियाँ,
होने दो अब तो शंखनाद!

मुर्दों को जीने दो, जागे—
पापी प्राणों का [illegible]!
हे महानर्त की आग जाग!
मेरे यौवन की आग, जाग!

हे जनमानस ममता विशाल,
हे चिनगारी की आग जाग!
स्वागत करते हैं हे स्वागत!
हे गगन पर्व-निराग जाग

[illegible] की [illegible]!
[illegible] की [illegible] आग—
दो [illegible] पत्तों की [illegible]

शृङ्गारमयी स्मृतियाँ छोड़ो,
दो जीवन का सच्चा प्रसाद।

पत्नियाँ आज पति को भूलें,
वह ज्योति जगा दें एक आज।
जिसमें विलास का अन्धकार,
जल जावे लेकर सूद ब्याज।

यह जीने मरने का सवाल,
बलि का भूखा है आज काल
हम अमरात्मा के अमर जीव,
रख दें अपना सब कुछ निकाल।

ओ भारत के बच्चों! जागो!
हे प्राणों के अभिमान, जाग।
स्वागत करते हैं हे आगत!
तू नूतन वर्ष विहान जाग!

—रामनाथ 'सुमन'

पैदा कर

वतन की पासबानी[1] में,
कोई सामान पैदा कर।
जिगर में जोश, दिल में दर्द,
तन में जान पैदा कर।
उठा ले जाये दम भर में,
जहाँ की ये [illegible]।
बनाकर ऐसा [illegible],
या कोई तूफ़ान पैदा कर।
हम अपनी शान की ख़ातिर
ख़ुशी से जान पर खेलें।
कि हों हम जान पर क़ुर्बान,
वह ईमान पैदा कर।
वतन वालों में [illegible] वलवले,
[illegible] जानबाज़ी।
कि सर मिटने की ख़्वाहिश,
ये दिल में [illegible] पैदा कर।

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]

खुदी[1] को नेस्त कर आयें,
बजायें जङ्ग का डङ्का।
कुछ ऐसे मनचले, दिलदार,
मर्द इन्सान पैदा कर।
न मर्गो-जीस्त[2] को देखूँ,
न देखूँ रंजो-राहत[3] को।
कि दिल में एक बेचैनी,
मेरे भगवान पैदा कर।

—क्षेमानन्द 'राहत'

गीत

पुलकित कर उर, मुकुलित कर हे,
जननी, घोर प्रलय में।
घन निशीथ-तम ज्योतिर्मय कर,
हे जीवन-अधिकारी।

---

[1] अहंभाव, स्वार्थपरता [2] मृत्यु और जीवन
[3] दुख और सुख

भारतीय गरिमा पर मानव,
उन्नत तेजपुंजधारी!
जनजीवन में अनुराग,
जन-मानस का आनन,
जीवन चिरनूतन में!
पुलकित कर उर, मुकुलित कर दे,
जननी धीर प्रणय में!
उत्तर दिशि हिमशुभ्र हिमाचल,
पद-पग मलयजनीरद।
दक्षिण सागर सिन्धु सलिल
धोता पदतल पावन
रज के ललित तारे
कहते, मानव प्यारे
तुम जिन कल्याण, भय में!
पुलकित कर उर, मुकुलित कर, है
जननी, धीर प्रणय में!
गाते गिरि श्रम गगन में,
किरणें नभ स्वर्णी!

सुन न सका पर जीवन अबतक
युग-आवाहन, जननी!
तेरा युग-रव भैरव
गूँज उठे सारा भव
जीवन जागे जय में!
पुलकित कर उर, मुकुलित कर, हे
जननी, घोर प्रलय में!
पथिक अकेला निशि अँधियारी,
पग-पग पर है दिग्भ्रम!
एक बार इस अंधगुहा में,
जागे सिंह पराक्रम!
एक बार हो जय-जय!
मूर्त्त विश्व का सब भय
गीत उठे ध्वनि-जय में!
पुलकित कर, उर, मुकुलित कर, हे
जननी, घोर प्रलय में!
अगा बीतती जाती है,
आवेगी धवला राका!

दिशा दिशा में फहरेगी,
भारत गौरव पुण्य पताका!
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

—[illegible]

झण्डा-गीत

झण्डा-गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति सरसाने वाला,
प्रेम सुधा बरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में,
मिट जायें भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

विजय-पताका

निज विजय पताका फहरे,
मुक्त वायु मडल में अपनी मानस लहरी लहरे।
लिखा रहे जगतीतल मे वह सत्याग्रह का साका,
हाथों मे हाथेयार न थे, हाँ थी वस यही पताका।
रोक न सका जिसे बढने से लोह का भी नाका,
चाक चमत्कृत अखिल विश्वने नया तर्क सा ताका
वह करना हो क्या, वर्वरता जिसक आगे ठहरे,
निज विजय-पताका फहरे।

दिया हमारी पुण्यभूमि ने दुर्लभ कोप हमे है,
सहे न हस्तक्षेप किसी का तो क्या दोप हमें है।
डरते है न डराते है हम, लोभ न रोप हमें है,
किन्तु विश्व की शान्ति तभी है जब सन्तोप हमें है।
जिसके भीतर चोर छिपा हो वही नीति से भहरे,
निज विजय-पताका फहरे।

भारतीय भाई-भाई हम सब विभु के बालक है,
कर्मकार हो पृथ्वीपति है, कृपक भूमि-पालक है।

आदर्शों के अनुगामी हम, नीति के नायक हैं,
व्यापार, कृषि, शिल्पादि अपने शासन-संचालक हैं।
हम नया जीवन निरन्तर [illegible] अर्पित हों सारे
निज विजय-पताका फहरें।

—मैथिलीशरण गुप्त

झण्डा-वन्दन

एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश!
इस झंडे के नीचे निश्चित एक अमिट उद्देश!
हमारा एक अमिट उद्देश।

देखा जागृति के प्रभात में एक स्वतन्त्र प्रकाश,
फैला है सब ओर एक सा एक अतुल उल्लास।
कोटि कोटि कंठों से [illegible] एक [illegible] निनाद,
[illegible] के [illegible] का [illegible]।
[illegible]
एक हमारा ऊँचा झण्डा, एक हमारा देश।

कितने वीरों ने कर-करके प्राणों का बलिदान,
मरते मरते भी गाया है इस झण्डे का गान।
रक्खेंगे ऊँचे उठ हम भी अक्षय इसकी आन,
चक्खेंगे इसकी छाया में रस विष एक समान।
एक हमारी सुख सुविधा है, एक हमारा क्लेश,
एक हमारा ऊँचा झण्डा एक हमारा देश।
मातृभूमि की मानवता का जाग्रत जय-जयकार;
फहर उठे ऊँचे से ऊँचा यह अविरोध, उदार
साहस अभय और पौरुष का यह सजीव संचार;
लहर उठे जन-जन के मन में सत्य अहिंसा प्यार;
अगणित धाराओं का संगम मिलन तीर्थ-सन्देश
एक हमारा ऊँचा झण्डा एक हमारा देश।
गूँजे मन्त्र-'एक हमारा देश'।

—सियारामशरण गुप्त

जय राष्ट्रीय निशान !

बढे शूर वीरों की टोली
खेलें आन मरण की होली
बूढे और जवान।
बूढे और जवान।
जय राष्ट्रीय निशान।
मन में दीन-दुखी की ममता,
हम मे हो मरने की क्षमता,
मानव-मानव मे हो समता,
धनी गरीब समान
गूंजे नभ मे तान
जय राष्ट्रीय निशान।
तेरा मेरुदण्ड हो कर में,
स्वतन्त्रता के महासमर में,
वज्रशक्ति बन व्यापे उर मे,
दे दें जीवन-प्राण
दे दें जीवन प्राण
जय राष्ट्रीय निशान।

—मोहनलाल द्विवेदी

गोलियों की लगी जब झड़ी थी।
नींव आजादी की तब पड़ी थी।
याद हो गर वो खूँ में नहाना।
तो न झण्डा यह नीचे झुकाना॥

उसने तो था न क्या जुल्म ढाया।
पेट के बल पै हमको चलाया।
कोसों बच्चों को पैदल भगाया।
माँओं बहिनों को घर घर रुलाया।
याद हो जो तुम्हें यह फिसाना।
तो न झण्डा यह नीचे झुकाना॥

और अब भी न क्या हो रहा है?
कौन सुख नींद में सो रहा है?
लाग पान न भर पेट खाना।
सच बोलो तो है जेलखाना।
है इसी से छिड़ा यह तराना।
होना आजाद या मिट ही जाना॥

गो गो कर लो अहद सर मिटेंगे।
पर न इस प्रन से तिलभर हटेंगे।

करमें लेकर इसे सूरमा—
कोटि-कोटि भारत-सन्तान।
हँसते हँसते मातृभूमि के—
चरणों पर होंगे बलिदान॥
हो घोषित निर्भीक विश्व में—
तरल तिरंगा नवल निशान।
वीर हृदय खिल उठें मारलें—
भारतीय रण में मैदान॥
हो, नस नस में व्याप्त चरित—
सरमा शिवा को नमो नमो।
राष्ट्र—पताका नमो नमो॥

नवयुवको, स्वातन्त्र समर में—
नव जीवन सञ्चार करो।
शस्त्र अहिंसा से दलकर—
दासता दुर्ग को क्षार करो।
शान्त क्रान्त युग में हे वीरो।
जीवन सुमन निसार करो।

[illegible] है [illegible] का।
[illegible] करो।
[illegible] है—
[illegible] भरो भरो।
नाद—प्याला भरो भरो॥
[illegible] की चोटी पर—
[illegible] उड़ायेंगे।
[illegible] नाद [illegible]—
[illegible] फहरायेंगे।
[illegible]
[illegible]।
[illegible]—
[illegible]।
[illegible] है—
[illegible] भरो भरो।
नाद—प्याला भरो भरो॥

तीन रंग का झण्डा प्यारा

तीन रंग का झण्डा प्यारा
ऊँचा उड़ हरदम फहराये।

सत्य-न्याय का चिन्ह हमारा
प्रेम-सुधा सब पर बरसाये॥

इस झण्डे को आगे लेकर
एक कौम बन कदम बढ़ावें
अपनी अपनी कुरबानी को
आजादी के लिये चढ़ावें।
फिर से प्यारा हिन्द हमारा
सुख की लहरों से लहराये।
हिंदू मुसलिम, बौद्ध, पारसी,
ब्राह्मण, हरिजन, सिक्ख, इसाई
हम तो एक वतन के ही हैं
आपस में सब भाई-भाई

हिल मिल कर सब काम करेंगे
आज़ादी भारत पा जाते
तीन रंग का झंडा प्यारा,
ऊँचा उठ हरदम फहराये

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

ध्वजाभिनन्दन

जो इसकी छाया में आवे
सर्वनाश से भी भिड़ जावे!
तुंग हिमालय से भारत के
महासिंधु तक यह फहरावें!

× × ×

सागर पर हो राज हमारा,
अम्बर पर अधिकार हमारा!
वायुयान औ, जलयानों पर
उड़ें तिरंगा झण्डा प्यारा!
नव-प्रभात हो, भारत भर में
हो ऐसा अनुपम उजियारा,
अन्धकार मिट जाय, मुक्ति के
गीतों में गूंजे नभ सारा!
भारत के कोने-कोने में,
झण्डा फहरे आज हमारा!

उठ जाये तूफान देश में
[illegible] !

× × ×

[illegible]
[illegible] !
[illegible]
[illegible] !
[illegible]
[illegible] !
[illegible]
[illegible] !

[illegible]
[illegible] !
[illegible]
[illegible] !

जय जय प्यारे राष्ट्र-निशान !

जय जय प्यारे राष्ट्र-निशान !
कोटि कोटि भारत-हृदयों का
तू हो चिर पूजित भगवान् ! जय०

चिर प्रतीक तू देशभक्ति का,
चिर स्मारक तू राष्ट्र-शक्ति का,
चिर प्रेरक तू अनासक्ति का,
तू है चिर गौरव मान ! जय०

अमर शहीदों का तू स्मारक,
शोषित जीवों का तू तारक,
साम्य ध्येय का सतत प्रचारक,
तू हो ध्येय और तू ध्यान ! जय०

तू स्वातन्त्र्य-गीत का गायक,
तू है नवस्फूर्ति का दायक,
तू विदलित जीवों का नायक !
अमर क्रान्ति का तू आह्वान ! जय०

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रयाण-गीत

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

राजतंत्र के इस खँडहर पर
प्रजातन्त्र के उठें नव शिखर;
जन-गण जय! जन मत जय! जय, जय, जय!

बढ़ो प्रभंजन-आँधी बनकर,
चढ़ो दुर्ग पर गाँधी बनकर
वीर हृदय! धीर हृदय! जय, जय, जय!

बलि पर बलि ले चलो निरन्तर
हो भारत में आज युगान्तर
हे बलमय! हे बलि मय! जय, जय, जय!

जगें मातृ-मंदिर के ऊपर
स्वतन्त्रता के दीपक सुन्दर
मंगलमय! बढ़ो अभय! जय, जय, जय!

कोटि-कोटि नित नत कर माथा
जनगण गावें गौरव-गाथा,
नम अक्षय! अमर अजय! जय, जय, जय!

—सोहनलाल द्विवेदी

———

बढ़े चलो-बढ़े चलो !

(प्रयाण गीत)

न हाथ एक शस्त्र हो
न साथ एक अस्त्र हो
न अन्न, नीर, वस्त्र हो

हटो नहीं ! : डटो वहीं !
बढ़े चलो ! : बढ़े चलो !

रहे समक्ष हिम-शिखर
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाय तन बिखर,

रुको नहीं ! : झुको नहीं !
बढ़े चलो ! : बढ़े चलो !

घटा घिरी अटूट हो
अधर में कालकूट हो
वही सुधा का घूँट हो

जिये चलो ! :
बढ़े चलो ! ·

गगन उगलता
छिड़ा मरण व
लहू का अप

अड़ो वहीं ! ·
बढ़े चलो !

चलो नयी मिसाल हो,
जलो नयी मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,

रुको नहीं ! · झुको नहीं !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !

—मोहनलाल द्विवेदी

प्रयाण-गीत

बढ़ चलो, बढ़ चलो
[illegible] भी, चलो!
[illegible] पर [illegible]
[illegible] चलो!

मत [illegible] में
मत [illegible] में
मत [illegible] में
[illegible] में मत टलो!

तुम स्वयं [illegible] हो
[illegible] में मत [illegible]
[illegible]
[illegible] चलो
[illegible]
[illegible] चलो
[illegible] चलो
[illegible] चलो

आग में तुम जलो
स्वर्ण से तुम गलो
प्रेम में तुम पलो
रूप में तुम ढलो

बढ चलो बढ चलो
धीर वीरो, चलो!
करतलों पर अमर
प्राण धर-धर चलो

हाथ में वज्र है
पाश को तोड दो
भाग्य यह कुछ नहीं
धर चरण मोड दो
ये चषक छोड दो
मधुकलश फोड दो
यज्ञ में एक बलि
की कडी जोड दो

खल-दल को दलो
छल कपट को छलो

पर कभी तुम जगत् का
सहारा न लो

नद बनो, नग बनो
धीर गीत, बनो!
कल्पनों पर उमर
प्राण पर-चर बनो

[illegible] जीत की
[illegible] रहा
[illegible] गीत [illegible]
[illegible] रहा
[illegible] रही
[illegible] रही
[illegible]
[illegible] रहा

बढ़ चलो, बढ़ चलो
धीर वीरो, चलो !
करतलों पर अमर
प्राण धर धर चलो।

मत झुको द्रोह से
मत झुको मोह से
मत लुको लोह से
आन से मत टलो

—सुधीन्द्र

रण-निमन्त्रण

आओ आओ ! वीरो आओ !
मातृभूमि की जय-जय गाओ !
स्वतन्त्रता की वेदी पर
बलिजावें हम सब मिलकर

स्वतन्त्रता है प्राण हमारा,
जीवन का बस एक सहारा,

धर्म उनसे दूर रहें !
ईश्वर जैसा न न ना ?

हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख-पारसी,
सारे सिर्फ़ सब भारतवासी।
प्राण जाय पर मृत्यु नहीं
मगर आपस न न कभी

जहाँ तमा मद पहने साड़ी,
धर्म-ध्वज की रक्षी नारी।
रक्षा—भार पर निशान
रहनी उन मौनन का ध्यान।

नारी करे [illegible] श्रम [illegible],
[illegible] अधर्म परिचा [illegible] ।
मानुष [illegible] रहे—
या [illegible] प्राण रहे

जय जय जग चिच्छक्ति भवानि,
जय जय जय स्वातन्त्र प्रदानि
अब हम मे संचार करो,
सत्य धर्म की विजय करो

—बैजनाथ महोदय

एकता-गीत

मेरी जाँ न रहे मेरी जाँ न रहे
सामाँ न रहे न व साज रहे।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे
मेरी माता के सर पर ताज रहे।
सिख, हिन्दू, मुसलमाँ एक रहे
भाई भाई सा रस्म-रिवाज रहे।
गुरुग्रंथ, कुरान-पुरान रहे
मेरी पूजा रहे औ नमाज रहे।
मेरी जाँ न रहे।

मेरी हस्ती मटिया मे नाच रहे
कोई गैर न [illegible] रहे !

मेरी [illegible] हो [illegible]
उस [illegible] आवाज़ रहे !

ये [illegible] और [illegible] रहें
पूरी हो फ़सल [illegible] रहे !

मेरे [illegible] पे [illegible] रहे
मेरी सो [illegible] की लाज रहे !
मेरी जी न रहे !...

मेरी [illegible] रहे
[illegible] रहे !

[illegible] रहे
[illegible] रहे !

[illegible]
[illegible] रहे !

[illegible]
[illegible] रहे !

मेरी जाँ न रहे मेरा सर न रहे।
सामाँ न रहे न ये साज रहे।

—माधव शुक्ल

ग़ैर

कोई नहीं है गैर !

बाबा ! कोई नहीं है गैर !
हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई,
देख, सभी है भाई-भाई
भारतमाता सब की माई,
मत रख मन में वैर

बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर !
भारत के सब रहने वाले,
कैसे गोरे कैसे काले ?
हिन्दू मुसलिम झगडे पाले,
पडगये जिससे जान के लाले,
काहे का यह वैर ?

बाबा ! कोई नहीं है गैर !
राम समझ रहमान समझ लें,
धर्म समझ ईमान समझ लें,
मसजिद कैसी मंदिर कैसा,
ईश्वर का अस्थान समझ लें,
कर दोनों की सैर
बाबा ! कोई नहीं है गैर !
सोचेगा किस पल में बाबा ?
क्यों बैठा है घर में बाबा ?
खाक मली क्यों तन में बाबा !
ढूँढ ले उसको मन में बाबा !

मांग सभी की खैर,
बाबा ! कोई नहीं है गैर !
कोई नहीं है गैर.
बाबा ! कोई नहीं है गैर !

हिन्दू-मुसलमान

रे, क्या हिन्दू ! क्या मुसलमान !
इन दो देहों में एक जान !!
दोनों इस धरती पर बसते दोनों के ऊपर आसमान
रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !
दोनों ही मिट्टी के पुतले
दोनों ही में है हाड मांस
दोनों हैं खाते अन्न एक
लेते हैं दोनों एक सांस
दोनों मिट्टी में मिलते हैं
फिर कब्र हो कि वह हो मसान !
रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !

मजमून वही, है वही बात
कुरआन पढो, या पढो वेद
फिर क्यों खूंरेजी—रक्तपात
समझा हमने यह नहीं भेद

क्यों नहीं गले मिलते दोनों

गीता पुराण, कलमा-कुरान ;

हे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !

इन ईद-परबों में ही बस

रह गये तुम्हारे गुण-गान !

अब धर्म और मजहब दोनों

लड़ते रहते हैं [illegible] !

ये राम रहीम झगड़ते क्यों,

है भला तुम्हारा क्या ध्यान ?

हे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !

यह सब झगड़ा मन्दिर की [illegible]

[illegible] देश को [illegible]

[illegible] के [illegible] क्या

रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !
इन दो देहों में एक जान !

—सुधीन्द्र

मन्दिर मेरा, मसजिद तेरी !

मन्दिर मेरा, मसजिद तेरी !
मेरे कहने में मेरी हट,
तेरे कहने में जिद तेरी
टकराते हम ये जाते गिर
मुसलिम, तेरी सुन्दर मसजिद
हिन्दू तेरा मनहर मन्दिर !
अब कह, मेरी या तेरी थी
यह मिट्टी पत्थर की ढेरी !!
मन्दिर मेरा, मसजिद तेरी !

बस एक बार ही डोले ये,
गिरते गिरते, ढहते ढहते
स्वर में स्वर भरकर बोले ये-

"एक बनो"

दोनों एक समान, भाई, दोनों एक समान !
मुसलमान-हिन्दू तुम पीछे, पहिले हो इन्सान !

एक तुम्हारा रूप रंग है,
एक चाल है एक ढंग है,

एक तरह के जिस्म तुम्हारे, एक तुम्हारी जान !
भाई, दोनों एक समान !

धर्म एक सा, ध्यान एक सा,
कर्म और ईमान एक सा,

मंदिर मसजिद सभी बराबर गीता और कुरान !
भाई, दोनों एक समान !

मिट्टी का ही मंदिर सुन्दर,
मिट्टी ही की मसजिद मनहर,

मिट्टी एक, फर्क नामों का, एक राम रहमान !
भाई, दोनों एक समान

छप रहा है !

गेय, प्रेरणा-प्रद राष्ट्रीय कविताओं

का

अभिनव संग्रह—

-: प्रभात फेरी :-

नवयुग-साहित्य-सदन

खजूरी बाजार

इन्दौर